

जब जागो तभी सवेरा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मनुष्य वस्तुओं को तो अपना बना लेता है, किन्तु वह यह कभी नहीं सोचता कि मैं कौन हूँ? आत्मा क्या है? जब यह भाव जाग्रत हो जाता है तो जीव आत्मोन्मुखी होता है। जब जग जायें तभी सवेरा अर्थात् मानव तो अज्ञान की नीद में सो रहा है। जब इस मोह निद्रा से उसकी मुक्ति हो जाये तो उसे अपना स्वरूप दिखने लगता है। शरीर और आत्मा दोनों अलग-अलग है। शरीर पंच भूतात्मक है और आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। चौरासी लाख जीव योनियों में आत्मा एकसमान है, केवल अभिव्यक्ति का अन्तर है। आत्मा का बंधन कर्ता भाव के कारण है। हमने जैसा बीज बोया है उसके कर्म के फल को प्राप्त करने के लिए यह शरीर मिला है। जीव अपने स्वरूप को समझ नहीं पाता। लेकिन उसे जैसे ही ज्ञान हो जाये मैं आत्मा हूँ वैसे ही वह मुक्त हो जाता है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र्य मुक्ति के मार्ग हैं। सम्यक् ज्ञान हो जाने के बाद यह ज्ञात हो जाता है कि यह संसार मिथ्या है। जिस वस्तु को प्राप्त करने के लिए हमने जीवनभर प्रयास किया वह वस्तु मेरी नहीं है। वह पुद्गलों का समूह है। जो वस्तु मेरी है, उसको तो मैंने पहचाना ही नहीं। यही वस्तु जब ज्ञात हो जाती है तो आदमी मुक्त हो जाता है।

जागने का अर्थ है पुरुषार्थ करना। जो पुरुषार्थ करता है, वह आगे बढ़ता है। जो समय के साथ नहीं चलता, वह पीछे रह जाता है। इसलिए समय पर जागृत होना चाहिए। स्वयं जागना चाहिए तथा दूसरों को भी जागृत करने की प्रेरणा देनी चाहिए। समाज के हर वर्ग के लोग जब जागृत हो जाते हैं तो सभी का विकास होता है। अपनी चेतना को विकसित करना चाहिए। देश के हित में चिन्तन करना चाहिए। चेतना जागृत रहे और देश के विकास के लिए स्वतन्त्र चिन्तन करना चाहिए। जागने का अर्थ है चेतना का विकास। जब किसी देश के

नागरिक जागृत हो जाते हैं तो देश का विकास होता है। यदि नागरिक सो जाते हैं तो देश का भाग्य सो जाता है।

जीवन का जितना समय बचा है, उसका सदुपयोग करना चाहिए। पुरुषार्थ सही दिशा में होना चाहिए। सही दिशा में किया गया पुरुषार्थ लक्ष्य की प्राप्ति करा देता है। प्रकृति हमें यह शिक्षा देती है कि सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए। एक चींटी दीवाल पर बार-बार चढ़ती है और गिरती है, किन्तु वह हार नहीं मानती। वह बराबर प्रयास करती रहती है और दीवाल पर चढ़कर अपने मंजिल को प्राप्त कर लेती है। प्रयत्न करने से मनुष्य को पीछे नहीं हटना चाहिए। मुख्य रूप से यह सूत्र विद्यार्थियों पर अधिक लागू होता है। विद्यार्थी को अपने मंजिल को प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि और पक्का इरादा रखना चाहिए। असफलता से कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। असफलता को जीतने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति हार मान करके रुक जाता है, उसका भाग्य भी वहीं रुक जाता है। भाग्य के भरोसे बैठकर कभी भी रुकना नहीं चाहिए।

संसार में जितने भी महापुरुष हुये हैं, उन्होंने यह सूत्र अपने जीवन में लागू किया। इसी का परिणाम है कि वे महान् कहलाये। जितने भी महान् लोग हुए हैं, बचपन में उन्हें घोर कष्ट का सामना करना पड़ा है, लेकिन उन्होंने कष्टों के सामने हार नहीं मानी, बल्कि कष्टों पर विजय प्राप्त की। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी का जीवन भी इस संबंध में अवलोकनीय है। जीवन के प्रारंभिक समय में उन्हें कैसी-कैसी आपदाओं का सामना करना पड़ा, यह भारतीय लोगों से छिपी नहीं है। वह स्वयं भी बहुत बड़े कर्मयोगी है। एक छोटे से गरीब परिवार में उत्पन्न होकर भारत जैसे देश के प्रधानमंत्री पद को अलंकृत किया है, यह उनकी जागरुकता का सबसे बड़ा उदाहरण है। उनके द्वारा जीवन क्षेत्र में किया गया पुरुषार्थ उनके मार्ग को प्रशस्त किया है। उन्होंने कठिनाइयों को कभी अपने ऊपर भारी नहीं होने दिया बल्कि कठिनाइयों को जीतकर उस पर विजय प्राप्त की। जीवन में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास होना जरूरी है।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है, परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती हैं

अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते हैं। जब मनुष्य तन-मन से जागृत हो जाता है तो वह स्वयं आगे बढ़ता है उसके आगे बढ़ने से देश आगे बढ़ता है। समय के नियोजन के बिना उन्नति होना असंभव है। जिस मौसम में जो फसल बोनी जानी है यदि उसको न बोकर अन्य फसल का उत्पादन करने का प्रयास किया जायेगा तो सफलता नहीं मिलेगी। इससे यह सिद्ध होता है कि समय का जीवन में कितना अधिक महत्व है। गया हुआ समय फिर जीवन में लौटकर नहीं आता। समयानुकूल आचरण करने से जीवनचर्या नियमित रहती है। मानव स्वस्थ रहता है। पशु-पक्षी, जलचर, नभचर आदि प्राणी प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करके स्वस्थ रहते हैं। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इसलिए मनुष्य को ऐसा आचरण करना चाहिए कि उसका सब अनुकरण करें। पुरुषार्थ के द्वारा जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए।